

Dr. Vandana
Professor

Suman

Dept. of Philosophy

H. D. Jain College, Ara.

UG - SEMESTER - VI

MJC-II : Contemporary Indian Philosophy

" Sri Aurobindo "

" Integral Yoga (पूर्णयोग) 1

MAR-2017													
M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28
29	30	31											

FEBRUARY • SATURDAY

042-323 • WK06

श्री अरविन्द एक प्रकृतिक चितंक, एक सत्य अन्वेषक हैं। उनकी स्वर्णिम मूर्त्तः अंतःद्वारे पर आधारित है। पाश्चिमी तथा पूर्वी दार्शनिक मान्यताओं को श्री अरविन्द ने एक नयी दृष्टि की। उनकी द्वारे संवलेषणात्मक है। इसलिये श्री अरविन्द के स्वर्णिम की पूर्व दुर्णिम (इन्टीग्रल फिलॉसफी) कहा जाता है।

श्री अरविन्द का सबसे महत्वपूर्ण विचार है कि अनप्य को संसार में रहते हुए मोक्ष प्राप्त करना है, न कि उसका परित्याग करके।

उन्होंने अपने 'विकासमय' के सिद्धान्त में कहा है कि "अनप्य एक अद्वैतता है जो अपने पक्ष स्वभाव से शक्ति और उर्जा है और वह 'सम्पूर्ण देवता' बनने के पथ पर है।"

श्री अरविन्द के अनुसार जीवन का लक्ष्य केवल मुक्ति या स्वयं-सिद्धि की प्राप्ति नहीं है, बल्कि विश्वगत पूर्णत्व की प्राप्ति है। (पूर्णयोग)

श्री अरविन्द के 'पूर्ण योग' को 'आदिमानस' संवलेषणात्मक योग कहा जाता है। वे यह मानते हैं कि यद्यपि विकास क्रम प्राकृतिक नियमों द्वारा चला करता है तथापि 'योग' इस क्रम में तीव्रता प्रदान करता है। योग विकास को 'दिव्य' बनाता है।

श्री अरविन्द की मान्यता है कि जीवन का प्रत्येक अंश साच्च्य है।

SUNDAY 12

2017

का ही अंश है। अतः प्रतीक अंगुष्ठा का पूर्णता प्राप्त करनी है। अतः सब बंधन कि संपूर्ण जीवन योग है।

शरीर प्राण गुणस कागी का विकसीकरण या 'अतिमानस' की प्राप्ति नहीं हो पायेगी जब तक हमारा लक्ष्य पूरा नहीं हो सकता। इसीलिए वे अपने इस प्रकार के योग को 'संवलणणात्मक योग' की संज्ञा देते हैं।

की प्राप्ति में श्री अरविन्द के पूर्ण योग में तीन स्तर प्रमुख -

1. आत्मसमर्पण
2. द्रष्टा मात्र का ज्ञान और
3. सर्वत्र भगवत दर्शन का अभ्यास।

की इच्छा न बुरकार अपुने समस्त बाह्य जीवन, मन और बुद्धि को भगवान के प्रातः पूर्णतः समर्पित कर दिया जाय।

योगाभ्यासी यह निरीक्षण करता है कि भगवान की शक्ति किस तरह उसके जीवन एवं उसकी प्रकृति को संशोधित एवं परिवर्तित करती है।

भगवत दर्शन में साध्य संसार के सभी कर्मा भगवान को दी देवता है या देवता का प्रयास करता है।

श्री अरविन्द के योग के रूप में आवश्यक माना जा रहा है।
क्योंकि मुख्य रूप से पर ध्यानसमर्पण
को साधन के माध्यम से वर्ण में आवश्यक
समा जाता है।

श्री अरविन्द के नीचे कर्तव्य
को ज्ञानयोग, कर्मयोग एवं भक्तियोग
का साधन के रूप में स्वीकार किया
जाता है, साधन तो केवल ध्यानयोग
(आत-मानस) है।

श्री अरविन्द के पूर्णयोग
में मात्र क्रिया ही आवश्यक नहीं है।
अपितु ज्ञान और भक्ति भी हैं।
इसकी प्राप्त में सभी समस्त लोक और
वृक्षाद की सहता को स्वीकार किया
है। इनके पूर्णयोग के साधक सभी
जीव हैं।

पूर्णयोग के स्वरूप का
वर्णन करते हुए श्री अरविन्द कहते हैं,
योग इसका साधन तादात्म्य का संबंध है

"Yoga means union with the" और
कारण है जिसके कारण श्री अरविन्द के
योग को पूर्ण योग कहा जाता है। योग
विकास की प्रक्रिया को अत्यंत प्रदान करता
है जिसको widening, heightening
and integration की प्रक्रिया कहते हैं।
योग इन सभी प्रक्रियाओं की सहायता
करता है, अतः इसे 'इन्टिग्रल' कहा
जाता है।

FRIDAY • FEBRUARY

11 को यह परिवर्तन निम्न स्तर से उच्च स्तर
 12 को हो रहा है। यह परिवर्तन शब्दी
 13 द्वारा सही भावना तथा सही कर्तव्य
 14 को मानसिकता जागृत करता है।
 15 दैनिक शक्ति जागृत होती है जो विभव
 16 तथा मानव में व्याप्त होती है।
 17 इस तरह से यतना भी
 18 आंतरिक होना चाहिए तथा द्वाारािक जीवन
 19 से मानसिक स्तर की चेतना को उसके
 20 अनुकूल मोड़ना होगा।

21 (आध्यात्मिककरण) spiritualisation
 22 यो का इसी प्रकार है। मनाव ज्ञानिक परिवर्तन
 23 द्वाारािक जीवन से मानसिक स्तर को
 24 परिवर्तित करके पृथ्वीय तंत्र
 25 करता है। जिससे आध्यात्मिक परिवर्तन
 26 हो सके। मानसिक स्तर के परिवर्तन के
 27 बाद उच्च स्तरीय आध्यात्मिक स्तर का
 28 जागवण आवश्यक हो जाता है मानसिक
 29 स्तर तक परिवर्तन होने के बाद आध्यात्मिक
 30 परिवर्तन का आधार तैयार हो जाता है।
 31 इस योगिक प्रक्रिया से आत्मा वास्तव
 32 वाक्य ज्ञान तथा आनन्द की प्राप्ति करती
 33 है तथा अपने काम से मुक्ति करके
 34 आध्यात्मिक रंग लेती है। मनाव ज्ञानिक
 35 परिवर्तन ऊपरी सतह तक होता है
 36 किन्तु आध्यात्मिक परिवर्तन स्तर से
 37 ऊपर उठकर अन्दर तक जाता है।

38 (अतिमानसिककरण) supramentalisation
 39 में सुपरामेंटल लाइवियन की आवश्यकता

आन्तरिक आवस्था में सुपरा गैट लाइ जेन की आवृत्तता पड़ती है। वास्तव में पूर्णरूपेण दैनिक चेतना में पारस्विकता आता है। अतः दृष्टिकोण बढ़ता जाता है। अतः विभाजन का विचार समाप्त हो सकता है। पूर्णतया के चार स्तर हैं, श्री सुरविन्द के अन्तःकरण = 1 मानसिक चंचलता को शांत करना जिस अचंचलता कहते हैं।

- 2 दूसरा है स्थिरता
- 3 शांति
- 4 निर्वृता ।

गुणात्मक रूप से अलग नहीं है। य चारों स्तर में चारों अवस्थाओं मानसिक विकास को उजागर करते हैं। जिससे कि मनस पूर्णतः सभी प्रकार के संभावना से मुक्त हो जाता है।